नक्षत्र फल

आपके जन्म के समय चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में विचरण कर रहा था। इस कारण

जन्म के समय आपको मृगशिरा नक्षत्र का चतुर्थ चरण प्राप्त हुआ है। मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने के फलस्वरूप आपकी जन्म राशि मिथुन है। मिथुन राशि का स्वामी बुध है। शास्त्रों के मतानुसार मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थचरण में जन्म लेने वाले जातक के नाम का प्रारंभिक अक्षर "की" होना चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न ग्रंथों में मृगशिरा नक्षत्र की व्याख्या विभिन्न ढंगों से की गई है। उदाहरणस्वरूप जातक–पारिजात नामक प्रसिद्ध ग्रंथ के मतानुसारः
चान्द्रे सौम्यमनोऽटनः कुटिलदृक कामातुरो रोगवान।

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक सौम्यचित वाला, यात्राओं का शौकीन, कुटील दृष्टि वाला, कामातुर तथा रोगी होता है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ बृह्मजातक के मतानुसारः
चपलश्चतुरो भीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक चंचल, चतुर, डरपोक, सुन्दर वाणी वाला, आशावादी धनवान् एवं ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातक दीपिका के मतानुसारः
चतुरश्चपलोधीरः क्रूरकर्मा क्षुधातुरः।
अंहकारी परद्वेषी मृगशीर्ष्णा भवेन्नरः।।

अर्थात जिस जातक का जन्म मृगशिरा नक्षत्र में हो वह चतुर, चंचल, धैर्य शाली, क्रूर कर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकार करने वाला तथा अन्य व्यक्तियों में द्वेष करने वाला होता है।

जातका–भरणम नामक ग्रंथ के मतानुसारः
शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजातजन्मा।।

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक अस्त्र–शस्त्र चलाने में प्रवीण, नम्र स्वभाव वाला, गुणो का आदर करने वाला, विलास प्रिय, राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

संक्षेप में मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक स्वभाव से चंचल, चतुर, वक्ता, भीरु, उत्साही, धनी, ऐश्वर्य का भोग करने वाला, कोमल चित वाला, भ्रमणशील, कामातुर, रोगी, चप्पल, शरीर से पुष्ट, सुन्दर परंतु नेत्र विकल, साहसी और शांत विचार वाला होता है। ऐसे जातक के पास अपार धन व अनेक मित्र होते हैं। वह विद्वान होता है परंतु जातक कभी–कभी स्वार्थी व अभिमानी भी होता है।

आपकी जन्म राशि मिथुन है। इसका स्वामी बुध है। विभिन्न ज्योतिष के ग्रंथों में विभिन्न श्लोकों द्वारा की गई है। उदाहरण स्वरूप एक प्रसिद्ध ग्रंथ जातक पारिजात के मतानुसारः
दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक लंबी आयु वाला, काम कला में प्रवीण तथा हास्य प्रिय होता है।

मानसागरी ग्रंथ के मतानुसार :
मिष्टवाक्यो लोलदृटर्दयालुमैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित्कणठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी।।
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृडव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने नरः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक मीठे वचन बोलने वाला, चंचल दृष्टि वाला, दयावान, मैथुन प्रिय, गाना गाने वाला, कराठ में रोग वाला, कीर्तिमान, धनवान, गुणी, गोरे रंग

वाला, लंबे शरीर वाला, चतुराई पूर्ण भाषा बोलने वाला, बुद्धिमान, दृढ़ संकल्प वाला, प्रत्येक कार्य में समर्थ तथा विभिन्न परिस्थितियों में न्याय करने वाला होता है।

सारावली नामक ज्योतिष के ग्रंथ में मिथुन राशि की व्याख्या निम्नलिखित ढंग से की गई है।
उन्नासश्यामचक्षुः सुरतविधिकलाकाव्यकृभ्दोगभोगी
हस्ते मत्स्याधिपांको विषयसुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।
कान्तः सौभाग्यहास्यप्रियवचनयुतः स्त्रीजितो व्यायताङ्ग
याति क्लीबैश्च सख्यं शशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।

जिस जातक के जन्म के समय मिथुन राशि प्राप्त हो तो वह जातक ऊँची नाक व काली आँखों वाला होता है। वह काम कला में प्रवीण होता है। वह कविता करने वाला होता है। वह नाना प्रकार के सुखों का भोग करने वाला होता है। उसके हाथ में मछली जैसा चिह्न होता है। वह विभिन्न विषय सुखों में लीन रहता है। वह बुद्धिमान तथा बड़े नेत्रों वाला होता है। वह सुंदर, भाग्यवान तथा हँसी मजाक करने वाला होता है। व मीठी वाणी बोलता है। वह स्त्री से पराजित होने वाला, लंबी देह वाला तथा दो माताओं द्धारा पाला जाने वाला होता है।

ज्योतिष के एक अन्य ग्रंथ ज्योतिशत्तवम के मतानुसारः
सुरतविधि कलाविन्नीलनेत्रोच्चनासो
विषय सुखसमेतो भोगभाग व्यायताङ्गः।
दयितवचनयुक्तः काव्यकृत कील्बसख्यः
शशिनि नृयुजि हस्ते मत्स्यपाकडः शिरालः।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक कई कलाओं को जानने वाला काली आँखों वाला, ऊँची नाक वाला, विषय सुखों से युक्त भोगी, बड़े शरीर वाला, मीठे वचन बोलने वाला, कविता पाठ करने वाला, मछली के हाथ पर निशान वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक ग्रंथ फलदीपिका के मतानुसारः
श्यामेक्षणःकुण्ग्रचतमूर्द्धजः स्त्रीक्रीडानुरक्तश्च परेक्डतज्ञः।
उतुङ्गनासः प्रिसगीतनृत्रो वसन सदान्त सदने च युग्मे।।

अर्थात मिथुन लगन में जन्म लेने वाला जातक काली आँखों वाला तथा घुंघराले बालों वाला होता है। ऐसे जातक विलासी होते हैं। वह अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। तथा दूसरों की इच्छा जल्द समझने में समर्थ होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने घर के अंदर ही रहना पसंद करते हैं। अर्थात अधिक भ्रमणशील नहीं होते।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य ग्रंथ जातका भरणम के मतानुसार
प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक जन मानस में लोकप्रिय, हथेली में मछली के चिह्न वाला, काम कला में प्रवीण, स्त्रियों का प्रिय तथा अपने समाज में अपनी सज्जनता से सम्मान तथा गौरव प्राप्त करता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातका दीपिका के मतानुसारः
मृदुरुपचितगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितो हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मपित्तस्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवद्यानुरक्तः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक कोमल व पुष्ट शरीर वाला होता है। वह स्पष्ट भाषा का प्रयोग करता है। वह समाज में अन्य व्यक्तियों की सहायता करने वाला, ज्ञानी, हास्यप्रिय व उत्तम आचरण वाला होता है। उसकी प्रकृति पित्त व कफ युक्त होती है। वह गाने बजाने में लिप्त रहता है।

संक्षेप में मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक चतुर, बुद्धिमान, दृढ़ मित्रों वाला, सुशील, कम बोलने वाला, परिवार को पालने वाला, रतिप्रिय, गुणवान, भोगी, स्वभाव से दानी, विषयासक्त, नृत्य व गान विद्या का प्रेमी, शास्त्रों का ज्ञाता, मीठे व स्पष्ट वचनों का प्रयोग करने वाला, कुशाग्र–बुद्धि, पुस्तक प्रेमी, मानसिक एवं शारीरिक कार्य में तत्पर, भ्रमणशील, कभी कभी दृढ़ प्रतिज्ञा, सर्व प्रिय, सर्व प्रेमी, गौरवयुक्त, हास्य व जुआ इत्यादि जानने वाला व रूपवान होता है। उसकी नाक ऊँची, बाल घुघंराले, गोल आँखें तथा शरीर पे तिल अथवा लहसुन आदि

चिह्न स्वरूप होते हैं। वह स्त्री सुखी होता है। उसे अचानक धन प्राप्ति का योग भी रहता है। ऐसे जातक के एक से अधिक व्यवसाय होते हैं। तथा व्यवसाय परिवर्तनशील होते हैं।

तिथियों में प्रतिपदा, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथि तथा आषाढ़ मास, स्वाती नक्षत्र तथा सोमवार अशुभ फलदायक होते हैं। वृषभ, सिंह, कन्या एवं तुला राशि वालों से जातक का उपकार होता है। कर्क राशि वालों से शत्रुता होती है। ऐसे जातक की अपने इष्ट गणेश जी की पूजा आराधना करनी चाहिए। पन्ना, हरे वस्त्र, गेहुँ, घी इत्यादि वस्तुओं का दान करना लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त मानसिक तनाव तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम करने हेतु बुध के तंत्रीय मंत्र का जाप या हवन करना या करवाना भी हितकारी सिद्ध होता है। बुध का तंत्रीय मंत्र इस प्रकार है। :
ऊं ऐं स्त्री श्री बुधाम नमः।